classmate
Date 23/04/20
Page 1

Philosophy
B.A, Part-II (Hons)
Paper-III

स्पिनोजा का द्रव्य विचार
(Spinoza Theory of Substance)

स्पिनोजा अपने दर्शन का प्रारंभ निरपेक्ष द्रव्य से करते हैं। उनके अनुसार ईश्वर एक निरपेक्ष एवं परम द्रव्य है। इसी से संपूर्ण सृष्टि व्युत्पन्न हुई है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य आत्मनिर्भर है तथा उसको भावना के लिए किसी अन्य भावना की आवश्यकता नहीं है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य एक और केवल एक है।

द्रव्य एक है इससे यह भी सिद्ध है कि द्रव्य आत्मनिर्भर (Self dependent) है अर्थात् वह अपने अस्तित्व के लिए न तो किसी अन्य भावना पर निर्भर है और न किसी अन्य सत्ता पर। चूंकि द्रव्य एक आत्मनिर्भर सत्ता है इससे यह भी सिद्ध होता है कि वह एक पूर्ण सत्ता (Perfect Being) है।

स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही परम द्रव्य है। इस प्रकार से स्पिनोजा के अनुसार ~~ईश्वर~~ द्रव्य एक अद्वैत, परम, स्वतंत्र होते हुए भी स्वयं अकारण, स्वयंभू तथा स्वतः सिद्ध है। द्रव्य की उपरोक्त परिभाषा के आधार पर द्रव्य के निम्न लक्षण स्पष्टतः नियमित होते है।

(i) द्रव्य स्वतंत्र है। द्रव्य को स्वतंत्र कहने का तात्पर्य यह है कि द्रव्य सबका आधार होते हुए भी स्वयं निराधार है।

(ii) द्रव्य निरपेक्ष है। द्रव्य स्वयं अकारण होने के कारण सापेक्ष नहीं। जो कारण होते है उसे कार्य पर आश्रित माना जाता है। अकारण होने से द्रव्य निरपेक्ष है।

(iii) द्रव्य अद्वितीय है। द्रव्य को एक से अधिक मानने से उसकी सत्ता सीमित होगी। अतः द्रव्य को स्वतंत्र मानने के लिये द्रव्य को अद्वितीय मानना आवश्यक है।

(iv) द्रव्य अपरिच्छिन्न तथा अपरिमित है। द्रव्य की सत्ता एक परम तथा स्वतंत्र

होने से वह किसी पर आश्रित नहीं है। वह एक असीम सत्ता है।

~~द्रव्य~~ स्वतः सिद्ध है।

~~कि~~ स्पिनोजा एवं देकार्त के द्रव्य विचार में काफी अन्तर है। देकार्त के अनुसार द्रव्य दो प्रकार का है- स्वतंत्र एवं परतंत्र। ईश्वर स्वतंत्र द्रव्य है जबकि और चित और अचित परतंत्र द्रव्य है। स्पिनोजा के अनुसार देकार्त के द्रव्य विचार में दोष है। यदि द्रव्य स्वतंत्र है तो चित-अचित को द्रव्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। ~~यदि~~ ~~द्रव्य~~ यदि द्रव्य स्वतंत्र है तो वह एक अनंत, सार्वभौम एवं स्वनियत होगा। एक से अधिक द्रव्य को स्वीकार करना द्रव्य की स्वतंत्रता का निषेध करना है। द्रव्य वह है जो स्वतंत्र है लेकिन परतंत्र नहीं है। इसी कारण देकार्त का द्वैतवाद स्पिनोजा के अद्वैतवाद में बदल जाता है।

स्पिनोजा का ~~ब्रह्म~~ द्रव्य विचार उपनिषद् के ब्रह्म के समान निर्गुण और निराकार है। द्रव्य (ईश्वर) के दो स्वरूप हैं- स्वरूप निर्गुण और स्वरूप सगुण। स्वरूप निर्गुण के अनुसार स्पिनोजा का द्रव्य-मन वचन

से परे एक अद्वितीय एवं अनिर्वचनीय स्वरूप है। स्वरूप सगुण के अनुसार स्पिनोजा का द्रव्य स्वयं निराकार होते हुए भी सृष्टि का आधार है। तात्पर्य यह है कि द्रव्य सृष्टिकर्ता भी है।

स्पिनोजा का मानना है कि प्रत्येक वस्तु में असंख्य गुण होता है। किसी वस्तु के कुछ गुणों का विवेचन करने पर उसके अन्य गुणों का निषेध हो जाता है। जैसे जब हम कहते हैं कि गाय सफेद है, तो ~~उस~~ गाय में लाल, पीला, हरा, नीला आदि रंगों का निषेध हो जाता है। स्पिनोजा का प्रसिद्ध कथन है- "प्रत्येक निर्वचन निषेधात्मक होता है।" (Every Determination is Negation)। इस प्रकार स्पष्ट है कि द्रव्य असीमित और पूर्ण है, इसलिये गुणों के आधार पर उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। अतः स्पिनोजा अपने द्रव्य को निर्गुण और अनिर्वचनीय कहता है।

स्पिनोजा के द्रव्य विचार के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम कह निष्कर्ष के रूप में कह

स्पिनोजा का द्रव्य एक तत्वमीमांसीय संप्रत्यय है। जिसके द्वारा विश्व की सारी वस्तुओं का निगमन किया गया है। स्पिनोजा द्रव्य के अन्तर्गत ही चेतन और विस्तार दोनों को सम्मिलित किया है। अतः ~~स्पि~~ स्पिनोजा द्रव्य को उपादान एवं निमित्त दोनों कारण मानता है। वह संपूर्ण विश्व को ईश्वर रूप (Nature Naturate) मानता है। स्पिनोजा द्रव्य को विश्व का सारतत्व मानता है।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.